गजानन माधव मुक्तिबोध और शरच्चंद्र मुक्तिबोध की चयनित कविताओं में जन चेतना

(Social Consciousness In The Selected Poems of Gajanan Madhav Muktibodh And Shartchandra Muktibodh)

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

सत्र : 2015-2016

शोध निर्देशक

डॉ. रामानुज अस्थाना

सहायक प्रोफेसर

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

शोधार्थी

माने अनिल लक्ष्मण

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य

पंजी. सं. 2015/02/205/015

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा 442005 (महाराष्ट्र)

शोध सारांश

साहित्य की कोई भी विधा उसमें समाज के सामाजिक तत्व प्रमुख रूप से उद्घाटित होते हैं। साहित्य सृजन में रचनाकार के व्यक्तित्व की छाप-छवियाँ जाने-अनजाने ही रचना में आ जाती है। मानव व्यक्तित्व के निर्धारण में जो तत्व मूल रूप से सहायक होते हैं, उनमें सामाजिक व परिवेशगत स्थितियों, पारिवारिक-संस्कार, शिक्षा, व्यावसायिक योग्यता, आर्थिक दशा एवं उसकी जीवन पद्धति का अहम योगदान रहता है। गजानन माधव मुक्तिबोध और शरच्चंद्र मुक्तिबोध के संदर्भ में भी यह सभी चीजें लागू होती हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में जन समाज की सारी परिस्थितियों को उद्घाघाटित किया हैं । वह नित्य रूप से उनमें चेतना को जगाने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। मनुष्य चेतनाशील होने पर इन विसंगतियों से भरे परिवेश एवं व्यवस्था के विरुद्ध उठ खड़ा होगा, इस विश्वास को लेकर ही वे अपनी कविता को इतना प्रभावक बना सके। काव्य में जन चेतना परंपराओं के प्रतिकूल प्रभाव को तोड़ने का पक्षधर है। इसने आदर्श भविष्य के सुनहरे स्वप्नों के साथ यथार्थ से जनसामान्य का साक्षात्कार करवाया है। मनुष्य की तबाह होती जिंदगी उनकी कविता का विषय बनने लगती है। उनकी कविता में टूटते मनुष्य की निराशा और प्रकट होने लगती है।

गजानन माधव मुक्तिबोध भी अपनी कविताओं में जन समाज के लिए अभिव्यक्ति के खतरों को उठाते है। इस दृष्टी से उनके काव्य का इतिहास जीवित लगने लगता है। अपने अभिव्यक्ति के खतरों से समकालीन जीवन के इतिहास को वे उद्घाटित कर रहे थे। मुक्तिबोध अपनी कविता में तथाकथित ठेकेदारों के स्वार्थ से उपजी सामाजिक विषमताएँ, उनके षडयंत्र से उपजी विभीषिकाएँ, शोषण आदि पर प्रहार करते हैं। अपने सृजन के क्षणों में इन सब के प्रति समाज को सचेत करते है। अपनी कविताओं के माध्यम से लगातार एसी ताकतों को खबरदार करते हैं।

शरच्चंद्र मुक्तिबोध के काव्य में भी जन चेतना मानवता का पक्ष लेकर आती है। वें मध्यवर्गीय समाज का वास्तव बिंब अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं। समता, स्वातंत्र्य, बंधुता आदि मूल्यों को वे महत्वपूर्ण मानते हैं। उनकी मानवतावादी कल्पना सार्वकालिक, नैतिक एवं सकलात्मक है। समाज में फैली धर्मान्धता, आत्याचार , गरीबी ,बेरोजगारी नेताओं की कूटनीति आदि विषय उनके काव्य का आधार बनते हैं। वे गरीब जनता की दुहाई देकर समाज परिवर्तन की मांग अपने काव्य के माध्यम से करते हैं। अपने आधिकारों के प्रति जनता में चेतना जगाकर उन्हें संघटित होने के लिय प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार देख सकते है कि मुक्तिबोध अपने रचनशील मानस के विकास क्रम में जहाँ एक ओर सामाजिक सारोकारों का लगाव रहा, वही दूसरी ओर रचना का बहुआयामी उपयोग करते हुए व्यक्ति को उत्पीड़न के विरुद्ध उठ खड़ा होने की अदम्य प्रेरणादायी धरातल प्रस्तुत करते हैं। अपनी मौलिक, वैचारिक चिंतन की सार्थक ऊर्जा के साथ सत्य निष्टा को उजागर करते हैं। आत्म संघर्ष की ज्वाला में तपकर शेष संसार के समक्ष नवीन दिशाओं का निर्धारण किया जिस ओर चलकर आम आदमी शोषण और उत्पीड़न से मुक्त सामाजिक संदर्भों में नवीन सोपान तय कर सके।

Research Summary

In any genre of literature elements of society are principally depicted. Traces of the personality of the writer inadvertently appears on the writing. The major elements which are responsible for the determination of the personality of a human being are also affected by the significant contribution of social and environmental conditions, family refinement, education, professional qualification, economic condition and life style. All these factors are applicable in case of Gajanan Madhav Muktibodh and Sharatchandra Muktibodh too. In their poetry they have depicted all kind of situations in the society. They continuously try to raise the level of consciousness of the society. Humans will be conscious and aware and they would raise against the environment and the system, with this belief they could make their poetry so effective. In poetry they are advocates of arresting the adverse effects of traditions of mass consciousness. With the golden dreams of ideal future they have made the masses face the reality. The life which is under destruction becomes the subject of their poetry. The desperation of a hopeless man is evident in their poetry.

In his poems Gajanan Madhav Muktibodh assumes the risks of expressing for the society. From this perspective the history of his poetry looks lively. He was showcasing the history of contemporary life through the risks of expressing. In his poems Muktibodh attacks the social inequality arisen from the selfishness of the so called henchmen, the problems arisen from their conspiracy and exploitation etc. During the moments of writing he makes the society aware of all these. Through his poems he warns such elements.

In the poetry of Sharatchandra Muktibodh the mass consciousness comes by taking sides with the humanity. He depicts true picture of the middle class society. For him values like equality, independence, and brotherhood are important. His humanist view is eternal, moral and inclusive. The religious fundamentalism, corruption, poverty, unemployment, politicking etc. form the base of his poetry. By clamoring the plight of poor people he demands the change in the

society through his poems. He inspires the masses to organize themselves by raising their consciousness.

Thus, it can be seen that during the process of developing the creative mind-set on the one hand Gajanan Madhav Muktibodh is close to social concerns, on the other Shartchandra Muktibodh makes multifaceted use of inspirational literary work to ignite and arise people against exploitation. He showcases his positive energy of ideological thinking and shows the truth and compassion. He established new paradigms against the rest of the world by burning himself in the flame of self-struggle so that a common man could touch new social horizons after liberating himself from exploitation and atrocity.